Title: Need to develop grand memorials at the birth and death places of Maharshi Dayanand Saraswati.
14.32 hrs.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at thirty two minutes

past Fourteen of the Clock.

(Shrimati Margaret Alva *in the Chair*)

MR. CHAIRMAN : Now, the House shall take up matters under Rule 377.

प्रो. रासा सिंह रावत (अजमेर) : सभापति महोदय, स्वराज्य के प्रथम मंत्रदृटा सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत, भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात राज्य के काठियावाड़ में टंकारा नामक ग्राम में 1824 ई0 को हुआ था। उनका सम्पूर्ण जीवन देश, समाज और मानवता के उपकार में व्यतीत हुआ। राट्रीय चेतना एवं सामाजिक जागृति पैदा करने और भारतीय अस्मिता को पुनर्जीवित करने में उनका बहुमूल्य योगदान था जिसे देश के सभी महापुरुषों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है। आज देश के करोड़ों लोग उनके प्रति अगाध श्रद्धा और सम्मान रखते हैं तथा उनके मंतव्यों और सिद्धांतों के अनुसार आचरण करते हैं। उनके नाम पर हजारों शिक्षण संस्थायें, गुरुकुल पाठशालायें देश में संचालित हैं। ऐसे महापुरुा का निधन 30 अक्तूबर, 1883 को भिणाय कोठी अजमेर (राजस्थान) में हुआ।

ऐसे महापुरुा की जन्म स्थली और निर्वाण स्थली का संरक्षण नहीं हो पाया और आज भी जन्म स्थली तथा निर्वाण स्थल के बहुत बड़े भाग का स्वामित्व निजी व्यक्तियों के हाथो में है अथवा व्यावसायिक उपयोग कर मूलस्थान की ऐतिहासिकता को नट कर रहे हैं।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से मेरा अनुरोध है कि महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली तथा निर्वाणस्थली संबंधित स्थलों का अविलम्ब अधिग्रहण करने की कार्यवाही करावें, ताकि इन पवित्र स्थानों की ऐतिहासिकता, स्वभाविकता तथा पुरातत्क एवं सांस्कृतिक महत्व अक्षुण्ण रह सके तथा वहां उनके गौरव के अनुरूप भव्य स्मारक ि वकसित किया जा सके।